विश्व हिन्दी सम्मेलन एवं हिन्दी पखवाड़ा संयुक्तांक

हंसध्वनि

2015

गृह पत्रिका

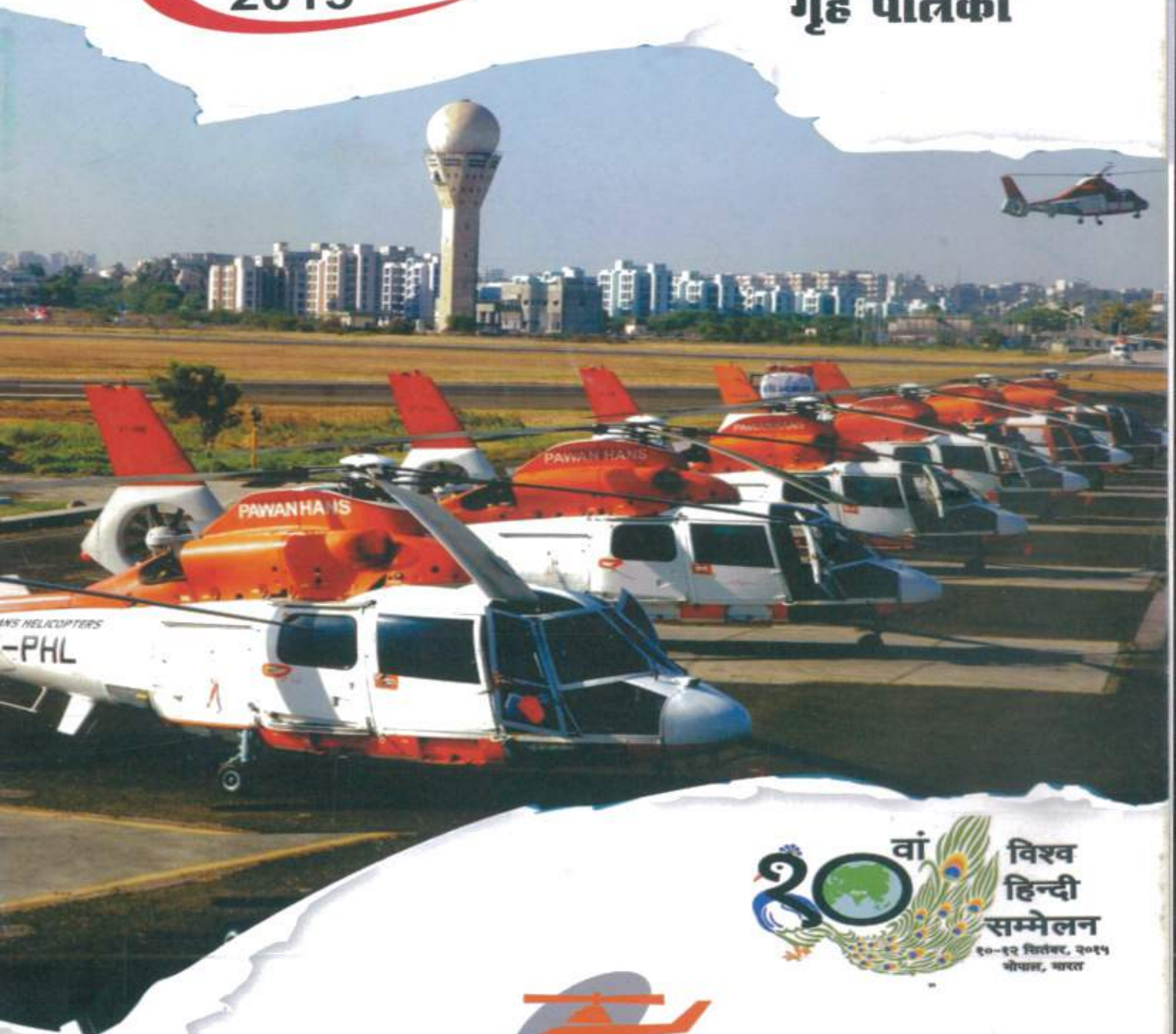

10वां विश्व हिन्दी सम्मेलन
१०-१२ सितंबर, २०१५
भोपाल, भारत

पवन हंस लिमिटेड

Pawan Hans Limited

हिन्दी पखवाड़ा 2015

हंसध्वनि

गृह पत्रिका

इस अंक में...

संपादक
आर बी कुशवाहा
प्रमुख (प्रशासन)

संपादक मंडल
रामकृष्ण
निगम मामले
अजंली बख्शी
अधिकारी (निगम मामले)
रजनीश कुमार सिन्हा
अधिकारी (राजभाषा/निगम मामले)

संपादन सहयोग
रेखा रानी
आशुलिपिक सह टंकक (हिंदी)

संपादकीय कार्यालय
पवन हंस लिमिटेड
सी-14 सेक्टर -1
नोएडा 201301
दूरभाषः 0120 2476734
ई-मेलः rajbhasha.ol@pawanhans.co.in

हंसध्वनि में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के हैं और उन विचारों से पवन हंस लिमिटेड की सहमति आवश्यक नहीं है।

आंतरिक वितरण के उद्देश्य से खरी कसौटी प्रकाशन लखनऊ द्वारा प्रकाशित एवं के सी प्रकाशन प्रा.लि. द्वारा मुद्रित कराकर पवन हंस लिमिटेड, पताः सी-14 सेक्टर 1, नोएडा 201301 से प्रकाशित।

पेज संख्या	शीर्षक
	संदेश
04	मंत्री नागर विमानन मंत्रालय
05	राज्यमंत्री नागर विमानन मंत्रालय
	अपील
06	सचिव नागर विमानन मंत्रालय
07	अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश
08	संपादकीय
09	दसवां विश्व हिन्दी सम्मेलन
12	स्वच्छ गंगा अभियान — मैं गालियां नहीं लेता
13	पूर्वी क्षेत्र की हलचल
14	सावित्रीबाई फुलेः स्त्री प्रेरणा की मिसाल
15	योग
	गीत
17	पवन हंस गीत मन तू उदास क्यों है?
18	अद्भुत हिन्दी
	कविता
19	बेटी क्यों नहीं, ये बेटियां बस यही दो मसले, शुभारंभ तो करो
20	दो पहलू, कर लो अपने वतन से प्यार
21	संस्कार, दहेज की आग क्यूं

P. ASHOK GAJAPATHI RAJU

MINISTER OF CIVIL AVIATION
GOVERNMENT OF INDIA

सत्यमेव जयते

संदेश

14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा ने हिन्दी भाषा को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इसलिए प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

हमारे विशाल और बहुभाषी देश में क्षेत्रीय भाषाएं भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं, किन्तु हिन्दी भाषा सभी परांतीय भाषाओं के बीच मजबूत कड़ी का काम करती है। चूंकि, नागर विमानन मंत्रालय का काम जनता से सीधे सरोकार वाला है अतः मंत्रालय एवं इसके संबद्ध कार्यालयों/उपक्रमों के लिए जनता से संवाद जनभाषा में करना आवश्यक है।

नागर विमानन मंत्रालय और इसके संबद्ध कार्यालयों/उपक्रमों को अपनी गतिविधियों से संबंधित सूचनाएं जनता को हिन्दी में उपलब्ध करवाना अधिक उपयोगी होगा। इसके लिए सभी वेबसाईटों का पूर्णतः द्विभाषी होना भी जरूरी है।

संवैधानिक अपेक्षाओं के अनुसार भी सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग आवश्यक है, क्योंकि हिन्दी देश की राजभाषा है। हम सभी हिन्दी में काम करके इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। मेरा मानना है कि सरकारी काम करते हुए हमें सरल हिन्दी का प्रयोग करना चाहिए।

हिन्दी दिवस 2015 के अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं।

(पी. अशोक गजपति राजू)

डॉ. महेश शर्मा

Dr. Mahesh Sharma

सत्यमेव जयते

राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
पर्यटन मंत्रालय
संस्कृति मंत्रालय
राज्य मंत्री नागर विमानन
भारत सरकार

Minister of State
(Independent Charge)
Ministry of Tourism
Ministry of Culture
Minister of State for Civil Aviation
Government of India

संदेश

संविधान के अनुच्छेद द्वारा राजभाषा का दर्जा प्राप्त 'हिंदी', भारत के बड़े भू-भाग में बोली व समझी जाने वाली भाषा है। 'मेक इन इंडिया' एवं 'डिजीटल इंडिया' जैसे महत्वाकांक्षी एवं भविष्य निर्माता पहलों के दृष्टिगत संपूर्ण विश्व आज भारत की ओर आशा और अपेक्षा से देख रहा है। वैश्वीकरण, नवनिर्माण व प्रौद्यौगिकी के इस युग में, जहां समस्त विश्व निराशा और आर्थिक मंदी का सामना कर रहा है, विकास की ओर अग्रसर भारत एक 'विराट संभावना' के रूप में संपूर्ण विश्व का नेतृत्व करने को तत्पर है।

भारत के हृदय पर साम्राज्य करने वाली हिंदी का साथ लिए बिना, इस प्रगतिशील देश के कोटि-कोटि नागरिकों के मन की बात नहीं समझी जा सकती। विश्व के देश जो भारत के साथ अर्थिक क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते हैं, वह हिंदी को अपने प्रबंधन का महत्वपूर्ण अंग बना रहे हैं। नागर विमानन मंत्रालय एवं इसके संबद्ध सभी कार्यालयों और उपक्रमों को भी समय की इस आवश्यकता को समझते हुए विविध व्यवस्थाओं में हिंदी के प्रयोग को यथोचित स्थान देना अपेक्षित है।

आज हिंदी इंटरनेट, रेडियो, टेलीविजन, फिल्मों, समाचार-पत्रों आदि विभिन्न संचार माध्यमों के कारण अत्यंत लोकप्रिय हो चुकी है और सरकारी कामकाज में प्रयोग की जाने वाली भाषा के संदर्भ में कम्प्यूटरों पर अब हिंदी में काम करना बहुत आसान है। अतः नागर विमानन मंत्रालय और इसके अधीनवर्ती कार्यालयों/उपक्रमों को भी अपने सरकारी काम में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करके राष्ट्र की प्रगति में अपना योगदान देना चाहिए।

हिंदी दिवस 2015 के अवसर पर हम सभी अपना अधिक से अधिक सरकारी काम हिंदी में करने का संकल्प लें और अपने सहकर्मियों को भी इस दिशा में योगदान के लिए प्रेरित करें।

हार्दिक शुभकामनाएं।

(डॉ. महेश शर्मा)

आर. एन. चौबे

R. N. Choubey

सत्यमेव जयते

सचिव
भारत सरकार
नागर विमानन मंत्रालय
नई दिल्ली-110003

SECRETARY
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF CIVIL AVIATION
NEW DELHI-110003

अपील

हमारे संविधान निर्माताओं ने भारत की अखंडता एवं राष्ट्रीय एकता को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में चुना। कारण स्पष्ट है कि हिंदी अधिकांश भारतीयों के मन-मस्तिष्क में अनेक रूपों में सहज तौर पर बसी हुई है। भारत सरकार में प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी-दिवस मनाया जाता है।

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार सरकारी कामकाज में कुछ सीमा तक हिंदी का प्रयोग अनिवार्य है। अपने दैनिक कार्य में राजभाषा हिंदी का प्रयोग हमारा शासकीय दायित्व भी है। अब कम्प्यूटरों और विभिन्न सॉफ्टवेयरों के कारण हिंदी में काम करना सरल हो गया है। अतः हमें अपना अधिक से अधिक सरकारी कार्य हिंदी में करने का भरसक प्रयास करना चाहिए।

इसी परिप्रेक्ष्य में हम नागर विमानन मंत्रालय में दिनांक 14 सितंबर, 2015 से 30, सितंबर 2015 तक हिंदी पखवाड़ा मना रहे हैं। इस दौरान इस मंत्रालय के सभी कार्मिकों में हिंदी के प्रति और अधिक रुचि जगाने तथा उन्हें अपना अधिक से अधिक कामकाज मूल रूप से हिंदी में करने के लिए प्रेरित करने के प्रयोजन से विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं आदि का आयोजन किया जा रहा है। आशा है कि मंत्रालय के सभी अधिकारी/कर्मचारीगण इन कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेंगे।

हिंदी दिवस, 2015 के इस अवसर पर मेरी मंत्रालय एवं इसके अधीनवर्ती कार्यालयों/उपक्रमों के सभी कार्मिकों, विशेष रूप से अधिकारियों से अपील है कि वे अपने सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग अधिकाधिक करें ताकि अधीनस्थों को भी प्रेरणा मिले।

"हिंदी दिवस, 2015" की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

(राजीव नयन चौबे)

अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक का संदेश

पवनहंस के सभी कर्मियों को हिंदी दिवस की शुभकामनाएं।

किसी भी देश की पहचान उसकी राष्ट्रभाषा से होती है। भारत एक बहुभाषी देश है और बहुभाषी देश में आपसी सौहार्द को पर्याप्त महत्व देते हुए राजभाषा के रूप में हिंदी हमारी प्रधान भाषा के रूप में पहचानी जाती है। यह एक लोकप्रिय भाषा है और पूरे देश को एक सूत्र में बांधने वाली सबसे प्रचलित संपर्क भाषा बन गई है। भारतीय नागरिक होने के नाते हिंदी में काम करना जहां हमारा नैतिक कर्तव्य है वही संवैधानिक दायित्व भी है।

इस साल हिंदी पखवाड़ा दिनांक 14.09.2015 से 28.09.2015 तक मनाया जा रहा है। मेरी आप सब से अपील है कि आप सब इसके दौरान होने वाली प्रतियोगिताओं में बढ़ चढ़कर भाग लें और हिंदी पखवाड़े को सफल बनायें।

राजभाषा हिंदी के इस महत्व को स्वीकारते हुए हम हिन्दी में काम करने की शपथ लें और आदत डालें। हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हम यह संकल्प लें की हिंदी में काम करके इसके विकास में अपना योगदान देंगे।

शुभकामनाओं के साथ।

आपका

(डॉ. बी पी शर्मा)

संपादकीय

मित्रों

आप सभी के समक्ष गृह पत्रिका हंस ध्वनि के इस वर्ष के दूसरे अंक को प्रस्तुत करते हुये मुझे बहुत ही प्रसन्नता हो रही है। हंस ध्वनि पवन हंस लिमिटेड की गृह पत्रिका है। पवन हंस परिवार के साथियों के सहयोग के बिना इसे प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है। मैं मानता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति में एक कला पक्ष अवश्य ही मौजूद होता है। प्रस्तुत पत्रिका के माध्यम से आप सभी अपने इस पक्ष को सभी के साथ सांझा कर सकते हैं। आपके द्वारा लिखे गये लेख, कवितायें, कहानियाँ तथा अन्य सामग्री हमारे लिये प्रेरणा स्त्रोत है और साथ ही हमारे ज्ञान का विस्तार भी करते हैं।

इस संयुक्तांक के क्रम में विशेष फोकस आलेख विश्व हिंदी सम्मेलन के संबंध में है। हमें उम्मीद है कि इस वैश्विक आयोजन से हमारी राजभाषा का वैश्विक प्रचार प्रसार होगाऔर हमें हिंदी में कार्य करके गर्व की अनुभूति होगी। पवन हंस में कार्यरत सभी महिला कार्मिक सकारात्मक सोच के साथ पवन हंस में अपना विशेष योगदान दे रही हैं। उनकी उपस्थिति सराहनीय है। पत्रिका में छपने वाला लेख सावित्रीबाई फूले महिलाओं की प्रेरणा का स्त्रोत है। महिला कार्मिकों द्वारा रचित कवितायें हम सभी को उत्साहित करने वाली हैं और साथ ही समाज में बेटियों की स्थिति को भी चिह्नित करती हैं। इस अंक में और भी बहुत कुछ नया है जो आप सभी का ध्यान आकर्षित अवश्य ही करेगा।

पवन हंस अपनी महत्वाकांक्षी योजनाओं के लिये उत्साह के साथ आगे बढ़ रहा है। यह योजनाएं अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की रचनात्मक सोच का परिणाम हैं जिन्हें हम जल्द ही पूरा करने का प्रयास करेंगे।

अंक से जुड़ी प्रतिक्रियाओं की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

आपका

(आर बी कुशवाहा)

दसवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन

दसवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन, मध्य प्रदेश सरकार की भागीदारी के साथ 10-12 सितंबर, 2015 तक मध्य प्रदेश के भोपाल शहर में आयोजित किया जा रहा है। दसवें विश्व हिंदी सम्मेलन को भारत में आयोजित करने का निर्णय सितंबर, 2012 में दिक्षण अफ्रीका के जोहांसबर्ग शहर में आयोजित नौवें विश्व हिंदी सम्मेलन में लिया गया था। विश्व हिंदी सम्मेलनों की परंपरा 1975 में नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन से शुरू हुई। तब से इन सम्मेलनों ने एक वैश्विक स्वरूप और गति प्राप्त कर ली है। क्रमानुसार, नौ विश्व हिंदी सम्मेलन विश्व के विभिन्न शहरों में आयोजित किए जा चुके हैं - वस्तुतः दो बार पोर्ट लुई (मॉरीशस) में, दो बार भारत में, पोर्ट ऑफ स्पेन (ट्रिनिडाड एण्ड टोबेगो), लंदन (यू. के), पारामारिबो (सूरीनाम), न्यूयार्क (अमरीका) और जोहांसबर्ग (दक्षिण अफ्रीका) में। इन सम्मेलनों ने हमेशा से ही प्रख्यात विद्वानों और हिंदी से स्नेह रखने वाले लोगों को आकर्षित किया है।

पूर्व में आयोजित नौ सम्मेलनों के ब्यौरे इस प्रकार हैं:

सं.	सम्मेलन	स्थान	वर्ष
1.	प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन	नागपुर, भारत	10-12 जनवरी,1975
2.	द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलन	पोर्ट लुई, मॉरीशस	28-30 अगस्त,1976
3.	तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन	नई दिल्ली, भारत	28-30 अक्तूबर,1983
4.	चतुर्थ विश्व हिंदी सम्मेलन	पोर्ट लुई, मॉरीशस	02-04 दिसंबर,1993
5.	पांचवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन	पोर्ट ऑफ स्पेन, ट्रिनिडाड एण्ड टोबेगो	04-08 अप्रैल,1996
6.	छठा विश्व हिंदी सम्मेलन	लंदन, यू. के.	14-18 सितंबर,1999
7.	सातवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन	पारामारिबो, सूरीनाम	06-09 जून, 2003
8.	आठवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन	न्यूयार्क, अमरीका	13-15 जुलाई, 2007
9.	नौवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन	जोहांसबर्ग, दक्षिण अफ्रीका	22-24 सितंबर, 2012

पूर्व के नौ विश्व हिंदी सम्मेलनों के मुख्य विषय निम्नानुसार थे:

1.	पहला- चौथा विश्व हिंदी सम्मेलन	वसुधैवमंकुटुंबकम्
2.	पांचवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन	अप्रवासी भारतीय और हिंदी
3.	छठा विश्व हिंदी सम्मेलन	हिंदी और भावी पीढ़ी
4.	सातवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन	विश्व हिंदी नई शताब्दी की चुनौतियाँ
5.	आठवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन	विश्व मंच पर हिंदी
6.	नौवां विश्व हिंदी सम्मेलन	भाषा की अस्मिता और हिंदी का वैश्विक संदर्भ

पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन 10 जनवरी से 12 जनवरी 1975 तक नागपुर में आयोजित किया गया। सम्मेलन का आयोजन राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के तत्वावधान में हुआ। सम्मेलन से सम्बन्धित राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष महामहिम उपराष्ट्रपति श्री बी डी जत्ती थे। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अध्यक्ष श्री मधुकर राव चौधरी उस समय महाराष्ट्र के वित्त नियोजन व अल्पबचत मंत्री थे। पहले विश्व हिन्दी सम्मेलन का बोधवाक्य था वसुधैव कुटुम्बकम। सम्मेलन के मुख्य अतिथि थे मॉरीशस के प्रधानमंत्री श्री शिवसागर रामगुलाम, जिनकी अध्यक्षता में मॉरीशस से आये एक प्रतिनिधिमंडल ने भी सम्मेलन में भाग लिया था। इस सम्मेलन में 30 देशों के कुल 122 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन में पारित किये गये मन्तव्य थे-

1- संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिया जावे।

2- वर्धा में विश्व हिन्दी विद्यापीठ की स्थापना हो।

3- विश्व हिन्दी सम्मेलनों को स्थायित्व प्रदान करने के लिये अत्यन्त विचारपूर्वक एक योजना बनायी जाय।

दूसरा विश्व हिन्दी सम्मेलन- आयोजन मॉरीशस की धरती पर हुआ। मॉरीशस की राजधानी पोर्ट लुई में 28 अगस्त से 30 अगस्त 1976 तक चले इस सम्मेलन के आयोजक राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष, मॉरीशस के प्रधानमंत्री डॉ. सर शिवसागर रामगुलाम थे। सम्मेलन में भारत से तत्कालीन केन्द्रीय स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मन्त्री डॉ. कर्ण सिंह के नेतृत्व में 23 सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल ने भाग लिया। भारत के अतिरिक्त सम्मेलन में 17 देशों के 181 प्रतिनिधियों ने भी हिस्सा लिया।

तीसरा विश्व हिन्दी सम्मेलन- आयोजन भारत की राजधानी दिल्ली में 28 अक्टूबर से 30 अक्टूबर 1983 तक किया गया। सम्मेलन के लिये बनी राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष तत्कालीन लोकसभा अध्यक्ष डॉ. बलराम जाखड़ थे। इसमें मॉरीशस से आये प्रतिनिधिमण्डल ने भी हिस्सा लिया, जिसके नेता थे श्री हरीश बुधू। सम्मेलन के आयोजन में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा ने प्रमुख भूमिका निभायी। सम्मेलन में कुल 6,566 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया जिनमें विदेशों से आये 260 प्रतिनिधि भी शामिल थे। हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवियत्री सुश्री महादेवी वर्मा समापन समारोह की मुख्य अतिथि थीं। इस अवसर पर उन्होंने दो टूक शब्दों में कहा था - ''भारत के सरकारी कार्यालयों में हिन्दी के कामकाज की स्थिति उस रथ जैसी है जिसमें घोड़े आगे की बजाय पीछे जोत दिये गये हों।''

चौथा विश्व हिन्दी सम्मेलन- आयोजन 2 दिसम्बर से 4 दिसम्बर 1993 तक मॉरीशस की राजधानी पोर्ट लुई में आयोजित किया गया। 17 साल बाद मॉरीशस में एक बार फिर विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा था। इस बार के आयोजन का उत्तरदायित्व मॉरीशस के कला, संस्कृति, अवकाश एवं सुधार संस्थान मन्त्री श्री मुक्तेश्वर चुनी ने सम्हाला था। उन्हें राष्ट्रीय आयोजन समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। इसमें भारत से गये प्रतिनिधिमण्डल के नेता थे श्री मधुकर राव चौधरी। भारत के तत्कालीन गृह राज्यमंत्री श्री रामलाल राही प्रतिनिधिमंडल के उपनेता थे। सम्मेलन में मॉरीशस के अतिरिक्त लगभग 200 विदेशी प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया।

पांचवां विश्व हिन्दी सम्मेलन- आयोजन हुआ त्रिनिदाद एवं टोबेगो की राजधानी पोर्ट ऑफ स्पेन में। तिथियाँ थीं - 4 अप्रैल से 8 अप्रैल 1996 और आयोजक संस्था थी त्रिनीदाद की हिन्दी निधि। सम्मेलन के प्रमुख संयोजक थे हिन्दी निधि के अध्यक्ष श्री चंका सीताराम। भारत की ओर से इस सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिनिधिमण्डल के नेता अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल श्री माता प्रसाद थे। सम्मेलन का केन्द्रीय विषय था- प्रवासी भारतीय और हिन्दी। जिन अन्य विषयों पर इसमें ध्यान केन्द्रित किया गया, वे थे - हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास, कैरेबियाई द्वीपों में हिन्दी की स्थिति एवं कम्प्यूटर युग में हिन्दी की उपादेयता। सम्मेलन में भारत से 17 सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल ने हिस्सा लिया। अन्य देशों के 257 प्रतिनिधि इसमें शामिल हुए।

छठा विश्व हिन्दी सम्मेलन- लन्दन में 14 सितम्बर से 18 सितम्बर 1999 तक आयोजित किया गया। यूके हिन्दी समिति, गीतांजलि बहुभाषी समुदाय और बर्मिंघम भारतीय भाषा संगम, न्यूयार्क द्वारा मिलजुल कर इसके लिये राष्ट्रीय आयोजन समिति का गठन किया गया, जिसके अध्यक्ष डॉ. कृष्ण कुमार और संयोजक डॉ. पद्मेश गुप्त थे। सम्मेलन का केंद्रीय विषय था - हिन्दी और भावी पीढ़ी। सम्मेलन में विदेश राज्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे के नेतृत्व में भारतीय प्रतिनिधिमण्डल ने भाग लिया। प्रतिनिधिमण्डल के उपनेता प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. विद्यानिवास मिश्र थे। इस सम्मेलन का ऐतिहासिक महत्व इसलिए है क्योंकि यह हिन्दी को राजभाषा बनाये जाने के 50वें वर्ष में आयोजित किया गया। यही वर्ष सन्तकबीर की छठी जन्मशती का भी था। सम्मेलन में 21 देशों के 700 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इनमें भारत से 350 और ब्रिटेन से 250 प्रतिनिधि शामिल थे।

सातवां विश्व हिन्दी सम्मेलन- सुदूरसूरी नाम की राजधानी पारामारिबो में 6 जून से 9 जून 2003 को आयोजित हुआ। इक्कीसवीं सदी में आयोजित यह पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन था। सम्मेलन के आयोजक थे श्री जानकीप्रसाद सिंह और इसका केन्द्रीय विषय था - विश्व हिन्दीः नई शताब्दी की चुनौतियाँ। सम्मेलन में हिस्सा लेने वाले भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व विदेश राज्य मन्त्री श्री दिग्विजय सिंह ने किया। सम्मेलन में भारत से 200 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इसमें 12 से अधिक देशों के हिन्दी विद्वान व अन्य हिन्दी सेवी सम्मिलित हुए। सम्मेलन का उद्घाटन 5 जून को हुआ था। यह भी एक संयोग ही था कि कुछ दशक पहले इसी दिन सूरीनामी नदी के तट पर भारतवंशियों ने पहला कदम रखा था।

आठवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन- 13 जुलाई से 15 जुलाई 2007 तक संयुक्त राज्य अमेरिका की राजधानी न्यूयार्क में हुआ। इस सम्मेलन का केन्द्रीय विषय था - विश्व मंच पर हिन्दी। इसका आयोजन भारत सरकार के विदेश मन्त्रालय द्वारा किया गया। न्यूयार्क में सम्मेलन के आयोजन से सम्बन्धित व्यवस्था अमेरिका की हिन्दी सेवी संस्थाओं के सहयोग से भारतीय विद्या भवन ने की थी। इसके लिए एक विशेष जालस्थल (वेबसाइट) का निर्माण भी किया गया। इसे प्रभासाक्षी.कॉम के समूह सम्पादक बालेन्दु शर्मा दाधीच के नेतृत्व वाले प्रकोष्ठ ने विकसित किया है।

नौवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन वर्ष 22 सितम्बर से 24 सितम्बर 2012 तक, दक्षिण अफ्रीका के शहर जोहांसबर्ग में हुआ। इस सम्मेलन में 22 देशों के 600 से अधिक प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इनमें लगभग 300 भारतीय शामिल हुए। सम्मेलन में तीन दिन चले मंथन के बाद कुल 12 प्रस्ताव पारित किए गए और विरोध के बाद एक संशोधन भी किया गया।

विश्व हिंदी सम्मेलनों में पारित प्रस्ताव

प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलनः संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिया जाए। वर्धा में विश्व हिंदी विद्यापीठ की स्थापना हो। विश्व हिंदी सम्मेलनों को स्थायित्व प्रदान करने के लिए ठोस योजना बनाई जाए।

द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलनः मॉरीशस में एक विश्व हिंदी केंद्र की स्थापना की जाए जो सारे विश्व में हिंदी की गतिविधियों का समन्वय कर सके। एक अंतरराष्ट्रीय हिंदी पत्रिका का प्रकाशन किया जाए जो भाषा के माध्यम से ऐसे समुचित वातावरण का निर्माण कर सके जिसमें मानव विश्व का नागरिक बना रहे और आध्यात्म की महान शक्ति एक नए समन्वित सामंजस्य का रूप धारण कर सके। हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ में एक आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान मिले। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एक समयबद्ध कार्यक्रम बनाया जाए।

तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलनः अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी के प्रचार-प्रसार की संभावनाओं का पता लगा कर इसके लिए गहन प्रयास किए जाएं। हिंदी के विश्वव्यापी स्वरूप को विकसित करने के लिए विश्व हिंदी विद्यापीठ स्थापित करने की योजना को मूर्त रूप दिया जाए। विगत दो सम्मेलनों में पारित संकल्पों की संपुष्टि करते हुए यह निर्णय लिया गया कि अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी के विकास और उन्नयन के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक स्थायी समिति का गठन किया जाए। इस समिति में देश-विदेश के लगभग 25 व्यक्ति सदस्य हों।

चतुर्थ विश्व हिंदी सम्मेलनः विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस में स्थापित किया जाए। भारत में अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय स्थापित किया जाए। विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिंदी पीठ खोले जाएं। भारत सरकार विदेशों से प्रकाशित दैनिक समाचार-पत्र, पत्रिकाएं, पुस्तकें प्रकाशित करने में सक्रिय सहयोग करे। हिंदी को विश्व मंच पर उचित स्थान दिलाने में शासन और जन-समुदाय विशेष प्रयत्न करे। विश्व के समस्त हिंदी प्रेमी अपने निजी एवं सार्वजनिक कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें और संकल्प लें कि वे कम से कम अपने हस्ताक्षरों, निमंत्रण पत्रों, निजी पत्रों और नामपट्टों में हिंदी का प्रयोग करेंगे। सम्मेलन के सभी प्रतिनिधि अपने-अपने देशों की सरकारों से संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाने के लिए समर्थन प्राप्त करने का सार्थक प्रयास करेंगे। चतुर्थ विश्व हिंदी सम्मेलन (दिसम्बर-1993) के बाद विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना मॉरीशस में हुई।

पांचवाँ विश्व हिंदी सम्मेलनः विश्व व्यापी भारतवंशी समाज हिंदी को अपनी संपर्क भाषा के रूप में स्थापित करेगा। मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना के लिए भारत में एक अंतर-सरकारी समिति बनाई जाए। सभी देशों, विशेषकर जिन देशों में अप्रवासी भारतीय बड़ी संख्या में हैं, उनकी सरकारें अपने-अपने देशों में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था करें। उन देशों की सरकारों से आग्रह किया जाए कि वे हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाने के लिए राजनीतिक योगदान और समर्थन दें।

छठा विश्व हिंदी सम्मेलनः विश्व भर में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन, शोध, प्रचार-प्रसार और हिंदी सृजन में समन्वय के लिए महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय केंद्र सक्रिय भूमिका निभाए। विदेशों में हिंदी के शिक्षण, पाठ्यक्रमों के निर्धारण, पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण, अध्यापकों के प्रशिक्षण आदि की व्यवस्था भी विश्वविद्यालय करे और सुदूर शिक्षण के लिए आवश्यक कदम उठाएं। मॉरीशस सरकार अन्य हिंदी-प्रेमी सरकारों से परामर्श कर शीघ्र विश्व हिंदी सचिवालय स्थापित करे। हिंदी को संयुक्त राष्ट्र में मान्यता दी जाए। हिंदी को सूचना तकनीक के विकास, मानकीकरण, विज्ञान एवं तकनीकी लेखन, प्रसारण एवं संचार की अद्यतन तकनीक के विकास के लिए भारत सरकार एक केंद्रीय एजेंसी स्थापित करे। नई पीढ़ी में हिंदी को लोकप्रिय बनाने के लिए आवश्यक पहल की जाए। भारत सरकार विदेश स्थित अपने दूतावासों को निर्देश दे कि वे भारतवंशियों की सहायता से विद्यालयों में एक भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण की व्यवस्था करवाएँ।

सातवाँ विश्व हिंदी सम्मेलनः संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाया जाए। विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी पीठ की स्थापना हो। भारतीय मूल के लोगों के बीच हिंदी के प्रयोग के प्रभावी उपाय किए जाएं। हिंदी के प्रचार हेतु वेबसाइट की स्थापना और सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग हो। हिंदी विद्वानों की विश्व-निर्देशिका का प्रकाशन किया जाए। विश्व हिंदी दिवस का आयोजन हो। कैरेबियन हिंदी परिषद की स्थापना हो। दक्षिण भारत के विश्व विद्यालयों में हिंदी विभाग की स्थापना हो। हिंदी पाठ्यक्रम में विदेशी हिंदी लेखकों की रचनाओं को शामिल किया जाए। सूरीनाम में हिंदी शिक्षण की व्यवस्था की जाए।

आठवाँ विश्व हिंदी सम्मेलनः विदेशों में हिंदी शिक्षण और देवनागरी लिपि को लोकप्रिय बनाने के उद्देय से दूसरी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण के लिए एक मानक पाठ्यक्रम बनाया जाए तथा हिंदी के शिक्षकों को मान्यता प्रदान करने की व्यवस्था की जाए। विश्व हिंदी सचिवालय के कामकाज को सक्रिय करने एवं उद्देश्यपरक बनाने के लिए सचिवालय को भारत तथा मॉरीशस सरकार सभी प्रकार की प्रशासनिक एवं आर्थिक सहायता प्रदान करें और दिल्ली सहित विश्व के चार-पाँच अन्य देशों में इस सचिवालय के क्षेत्रीय कार्यालय खोलने पर विचार किया जाए। सम्मेलन सचिवालय यह आह्वान करता है कि हिंदी भाषा को लोकप्रिय बनाने के लिए विश्व मंच पर हिंदी वेबसाइट बनाई जाए। हिंदी में ज्ञान-विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी विषयों पर सरल एवं उपयोगी हिंदी पुस्तकों के सृजन को प्रोत्साहित किया जाए। हिंदी में सूचना प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाने के प्रभावी उपाय किए जाएं। एक सर्वमान्य व सर्वत्र उपलब्ध यूनिकोड को विकसित व सर्वसुलभ बनाया जाए। विदेशों में जिन विश्वविद्यालयों तथा स्कूलों में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन होता है उनका एक डेटाबेस बनाया जाए और हिंदी अध्यापकों की एक सूची भी तैयार की जाए। यह सम्मेलन विश्व के सभी हिंदी प्रेमियों और विशेष रूप से प्रवासी भारतीयों तथा विदेशों में कार्यरत भारतीय राष्ट्रिकों से भी अनुरोध करता है कि वे विदेशों में हिंदी भाषा, साहित्य के प्रचार-प्रसार में योगदान करें। वर्धा स्थित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में विदेशी हिंदी विद्वानों के अनुसंधान के लिए शोधवृत्ति की व्यवस्था की जाए। केंद्रीय हिंदी संस्थान भी विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार व पाठ्यक्रमों के निर्माण में अपना सक्रिय सहयोग दे। विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी पीठ की स्थापना पर विचार-विमर्श किया जाए। हिंदी को साहित्य के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और वाणिज्य की भाषा बनाया जाए। भारत द्वारा राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तरों पर आयोजित की जाने वाली संगोष्ठियों व सम्मेलनों में हिंदी को प्रोत्साहित किया जाए।

नौवाँ विश्व हिंदी सम्मेलनः 22 से 24 सितम्बर 2012 को दक्षिण अफ्रीका में आयोजित 9वें विश्व हिंदी सम्मेलन ने, जिसमें विश्वभर के हिंदी विद्वानों, साहित्यकारों और हिंदी प्रेमियों आदि ने भाग लिया, रेखांकित किया कि :

हिंदी के बढ़ते हुए वैश्वीकरण के मूल में गांधी जी की भाषा दृष्टि का महत्वपूर्ण स्थान है। मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना की संकल्पना प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन के दौरान की गई थी। यह सम्मेलन इस सचिवालय की स्थापना के लिए भारत और मॉरीशस की सरकारों द्वारा किए गए अथक प्रयासों एवं समर्थन की सराहना करता है। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय भी विश्व हिंदी सम्मेलनों में पारित संकल्पों का ही परिणाम है। वह विश्वविद्यालय हिंदी के प्रचार-प्रसार और उपर्युक्त आधुनिक शिक्षण उपकरण विकसित करने में सराहनीय कार्य कर रहा है। सम्मेलन केंद्रीय हिंदी संस्थान की भी सराहना करता है कि वह उपयुक्त पाठ्यक्रम और कक्षाओं का संचालन करके विदेशियों और देश के गैर हिंदी भाषी क्षेत्र के लोगों के बीच हिंदी का प्रचार-प्रसार कर रहा है।

दसवें विश्व हिंदी सम्मेलन में समकालीन मुद्दों और विषयों पर विचार-विमर्श किया जाएगा तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, सूचना प्रौद्योगिकी, प्रशासन और विदेश नीति, विधि, मीडिया आदि के क्षेत्रों में हिंदी के सामान्य प्रयोग और विस्तार से संबंधित तौर तरीकों पर गंभीर चर्चा होगी। सम्मेलन का मुख्य विषय "हिंदी जगतः विस्तार एवं संभावनाएं" है। निर्धारित विषयों पर सम्मेलन में समानांतर शैक्षिक सत्र भी चलेंगे।

स्वच्छ गंगा अभियान

स्वच्छ गंगा अभियान की शुरूआत 1985 में की गई। नई सरकार आने पर स्वच्छ गंगा अभियान पर ज्यादा जोर दिया जाने लगा। गंगा हमारी धरोहर है हिंदू धर्म में इसका बहुत महत्व है। लोग गंगा के जल को बहुत पवित्र जल मानते हैं। वे गंगा नदी में स्नान कर अपने पापों को धो देते हैं। लेकिन हमारे रीति रिवाजों और कुछ अंधविश्वासी लोगों के कारण गंगा नदी प्रदूषित होती जा रही है। उद्योगो से निकलने वाला हानिकारक पदार्थ भारी मात्रा में गंगा में प्रवाहित कर दिया जाता है, लोग बिना सोचे समझे किसी भी प्रकार के कचरे को नदी में फेंक देते हैं। जिससे गंगा नदी का स्वच्छ पानी प्रदूषित हो गया है और गंगा के पानी में ऑक्सीजन की मात्रा 0 प्रतिशत हो गई है। परन्तु भारत के माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने इस अभियान के लिये लगभग 30000 करोड़ रूपये की लागत से गंगा नदी की सफाई करने का ऐलान किया। इस अभियान के शुरू होने के बाद 2015 में वैज्ञानिकों द्वारा किये गये शोध के मुताबिक गंगा नदी में ऑक्सीजन की मात्रा लगभग 7 प्रतिशत बढ़ गई है। यदि हम गंगा को साफ सुथरा रखेंगे तो भारत के कई क्षेत्रों में पानी की उपलब्धता बढ़ जायेगी। यह हमारा कर्तव्य है कि हम गंगा की साफ सुथरा रखें।

जय हिंद - जय भारत

रचयिता जगदीश कुमार

कनि0 सचिवीय अधिकारी-1

मैं गालियां नहीं लेता

महात्मा बुद्ध एक बार एक गाँव से गुजर रहे थे। उस गांव के एक लोग उन्हें पसंद नहीं करते थे। वैसे भी हमारा स्वभाव रहा है कि हमेशा ही भले लोग के हम शत्रु रहे हैं। उस गांव के लोग भी हमारे जैसे रहे होंगे। वो भी बुद्ध के दुश्मन थे। जैसे ही वह गांव मे घुसे गाँव वालो ने रास्ते पर उन्हें घेर लिया। बहुत गालियाँ दी और बुरा भला कहा। बुद्ध ने सुना और फिर उनसे कहा, मेरे मित्रों तुम्हारी बात पूरी हो गयी हो तो मैं जाऊ, मुझे दूसरे गाँव जल्दी पहुचना है। गांव वाले हैरान हो गये। उन्होंने कहा, हमने क्या तुमसे मीठी बातें कहीं है जो ऐसे पूछ रहे हो। हमने तो गालियां दी है क्या तुम्हें गुस्सा नहीं आया और तुमने कोई प्रतिक्रिया भी नहीं दी।

महात्मा बुद्ध मुस्कुराते हुये बोले तुमने थोड़ी देर कर दी। अगर तुम दस साल पहले आये होते तो मजा आ गया होता। मैं तुम्हें गालियां देता, मैं गुस्सा भी होता। कितना रस आता और खूब बातचीत होती। लेकिन तुम लोगो को मुझसे मिलने में देर हो गयी है। बुद्ध ने कहा, अब मैं उस जगह हूँ कि मैं तुम्हारी गाली लेने में असमर्थ हूँ। तुमने गालियां दी वो ठीक है, लेकिन तुम्हारे देने से क्या होता है, मुझे भी तो उन्हें लेने के लिए बराबरी का भागीदार होना चाहिये। मैं उसे लूँ तभी तो उसका नतीजा निकलेगा। लेकिन मैं तुम्हारी गाली नहीं लेता। गौतम बुद्ध ने बताया कि मैं दूसरे गांव से निकला था वहां के लोग भेंट करने मिठाइयां लाये थे। मैंने उनसे कहा कि मेरा पेट भरा है तो वह मिठाइयां वापस ले गये। जब मैं कुछ लूँगा ही नहीं तो कोई मुझे कैसे दे पायेगा। बुद्ध ने उन लोगों से पूछा, वो लोग मिठाइयां ले गये तो उन्होंने मिठाई का क्या किया होगा? भीड़ मे से एक आदमी बोला, उन्होंने अपने बच्चों और परिवार में बांट दी होगी।

गौतम बुद्ध ने कहा, दोस्तों तुम गालियां लाये हो मैंने ली नहीं। अब तुम क्या करोगे, घर ले जाओगे, बाटोगे? मुझे तुम पर बड़ी दया आती है कि अब तुम इन गालियों का क्या करोगे। क्योंकि, जिसकी आँख खुली है वह गाली नहीं लेगा और ऐसे में तो गुस्से का सवाल ही नहीं उठता। आंखे रहते हुये मैं कैसे काँटो पर चलूं और आंखे रहते हुये मैं कैसे गालियां लूँ और होश में रहते हुये मैं कैसे क्रोधित हो जाऊं, मैं बड़ी मुश्किल में हूँ। मुझे माफ कर दो। तुम गलत आदमी के पास आ गये हो। मै चलता हूँ मुझे दूसरे गांव जाना है।

रामाश्रय सिंह

प्रधान कार्यालय

पूर्वी क्षेत्र की हलचल

सावित्रीबाई फुलेः स्त्री प्रेरणा की मिसाल

भारत की पहली अध्यापिका और पहली प्रधानाचार्या सावित्रीबाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 को हुआ। वे सम्पूर्ण समाज के लिए एक आदर्श प्रेरणास्त्रोत, प्रख्यात समाज सुधारक, जागरूक और प्रतिबद्ध कवियत्री, विचारशील चिंतक, भारत के स्त्री आंदोलन की अगुआ थी। वंचितों के लिए शिक्षा के बंद हो चुके दरवाजों को इन्होंने अपने अथक प्रयासों से खोला। सावित्रीबाई फुले और ज्योतिबाफुले द्वारा दी जा रही शिक्षा ज्योति बुझाने के लिए असामाजिकों द्वारा अथक प्रयास किये गये, इसके लिए उन्होंने ज्योतिबा फूले के पिता गोविंदराव को भड़काकर उन्हें घर से निकलवा दिया। घर से निकाले जाने के बाद भी सावित्रीबाई फूले और ज्योतिबा फूले ने अपना कार्य जारी रखा।

जब सावित्रीबाई फुले घर से बाहर लड़कियों को पढ़ाने निकलती थीं तो उन पर विरोधियों द्वारा पत्थर फेंके जाते थे। उन्हें रास्ते में रोक कर गुंडो द्वारा अपशब्द कहे जाते थे तथा उन्हें जान से मारने की लगातार धमकियां दी जातीं थीं। लड़कियों के लिये चलाए जा रहे स्कूल बंद कराने के अनेक प्रयास किये जाते थे। सावित्री बाई डर कर घर बैठ जायेगी, इसलिए उन्हें तरह-तरह से तंग किया जाता था। ऐसा ही एक बदमाश सावित्रीबाई फुले का पीछा कर उन्हे तंग करने लगा। एक दिन तो उसने हद ही कर दी। वह अचानक उनका रास्ता रोककर खड़ा हो गया और उन पर शारीरिक हमला कर दिया। ऐसे में सावित्रीबाई डरी नहीं बल्कि बहादुरी से उस बदमाश का मुकाबला करते हुए निडरता से उसे दो-तीन थप्पड़ कसकर जड़ दिए। सावित्रीबाई फुले से थप्पड़ खाकर वह बदमाश इतना शर्मसार हो गया कि फिर कभी उनके रास्ते में नजर नहीं आया। 1 जनवरी 1848 से लेकर 15 मार्च 1852 के दौरान इन तीन सालों में सावित्रीबाई फूले ने अपने पति ज्योतिबा फूले के साथ मिलकर बिना किसी आर्थिक मदद के लड़कियों के लिए 18 स्कूल खोले। पूना के भिड़े नामक सज्जन के यहां 1848 में खुले पहले स्कूल में छह छात्राओं ने दाखिला लिया। जिनकी आयु चार से छह के बीच थी। छह छात्राओं की कक्षा के बाद सावित्रीबाई घर-घर जाकर लोगों को अपनी-अपनी बच्चियों को पढ़ाने के लिए अपील करने लगी तथा उनकी कड़ी मेहनत के फलस्वरूप पहले ही दिन स्कूल में इतनी छात्राएं हो गई कि एक और अध्यापक नियुक्त करना पड़ा। वह अध्यापक विष्णुपंत थत्ते थे। थत्ते ने मानवता के नाते मुफ्त में पढ़ाना स्वीकार कर, विद्यालय की प्रगति में अपना योगदान दिया। सावित्रीबाई फुले ने 1849 में पूना में ही उस्मान शेख के यहां मुस्लिम स्त्रियों व बच्चों के लिए प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र खोला। 1849 मे ही पूना, सतारा व अहमद नगर जिले में पाठशालाएं खोली। महान शिक्षिका सावित्रीबाई फुले ने न केवल शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व काम किया, अपितु भारतीय स्त्री की दशा सुधारने के लिए उन्होंने 1852 में महिला मंडल का गठन कर, वह भारतीय महिला आंदोलन की प्रथम अगुआ भी बन गई। बाल-विवाह, सती प्रथा, बेटियों को जन्म देते ही मार देना, विधवा स्त्री के साथ तरह-तरह के अत्याचार करना, अनमेल विवाह, बहुपत्नी विवाह आदि प्रथाएं समाज में प्रचलित थी। समाज में रूढ़ियों का बसेरा था जो बहुत अधिक विकृत रूप ले चुकी थी अतः इन विकृतियों को समाप्त करना बहुत ही जरूरी हो गया था। ऐसे समय सावित्रीबाई फुले और ज्योतिबाफुले ने इस अन्यायी समाज और उसके अत्याचारों के खिलाफ खड़े होने का बीड़ा उठाया। फुले द्वारा स्थापित महिला मंडल ने बाल विवाह, विधवा होने के कारण स्त्रियों पर किए जा रहे अत्याचारों के विरूद्ध स्त्रियों और समाज के अन्य वर्ग को इकट्ठा कर समाजिक बदलाव के लिए संघर्ष किया। हिन्दू स्त्री के विधवा होने पर उसका सिर मूंड दिया जाता था। विधवाओं के सिर मूंडने जैसी कुरीतियों के खिलाफ लड़ने के लिए सावित्रीबाई फूले ने नाइयों से विधवाओं के बाल न काटने का अनुरोध करते हुए आन्दोलन चलाया, जिसमें काफी संख्या में नाइयों ने भाग लिया तथा विधवा स्त्रियों के बाल न काटने की प्रतिज्ञा दिलाई। स्त्रियों की स्थिति पशु समान थी। स्त्री के विधवा होने पर उसके परिवार के अन्य पुरुषों द्वारा उसका दैहिक शोषण किया जाता था। सावित्रीबाई फूले ने भारत का पहला बाल हत्या प्रतिबंधक गृह तथा असहाय महिलाओं के लिए अनाथाश्रम खोला। स्वयं सावित्रीबाई फूले ने आदर्श सामाजिक कार्यकर्ता का जीवन अपनाते हुए आत्महत्या करने जाती हुई एक विधवा स्त्री काशीबाई जोकि विधवा होने के बाद भी माँ बनने वाली थी, को आत्महत्या करने से रोककर उसके बच्चे यशंवत को अपने दत्तक पुत्र के रूप में गोद लिया। दत्तक पुत्र यशवंत राव को पाल-पोसकर डॉक्टर यशवंत बनाया। सावित्रीबाई फुले के जन्मदिन 3 जनवरी को भारतीय शिक्षा दिवस और उनके परिनिर्वाण 10 मार्च को भारतीय महिला दिवस के रूप में मनाया जाता रहा है। भारत की पहली अध्यापिका तथा सामाजिक क्रांति की अग्रदूत सावित्रीबाई फुले एक प्रसिद्ध कवयित्री भी थी। उनकी द्वारा रचित कविता की कुछ पंक्तियां प्रस्तुत हैं।

" जाओ, जाकर शिक्षा पाओ,
बनो परिश्रमी और स्वनिर्भर,
काम करो और धन कमाओ,
बुद्धि का तुम करो विकास,
ज्ञान बिना सब कुछ खो जावे,
बुद्धि बिना हम पशु हो जावें,
अपना वक्त न करो बर्बाद,
जाओ जाकर शिक्षा पाओ,
विवश और उत्पीड़ित हैं जो
उनकी पीड़ा तुम दूर करो।"

योग

तपस्विभ्योअधिको योगी, ज्ञानिभ्योअपि मतोअधिकः।
कर्मिभ्यस चाधिको योगी, तस्माद योगी भवार्जुन।।

योगश्वर श्रीकृष्ण अध्याय छह
(गीता)

तपस्वियों से योगी को ऊपर माना गया है, ज्ञानियों और कर्मकांडियों से भी योगी को ऊपर माना गया है, इसलिये अर्जुन तू योगी बन।

योगिनाम् अपि सर्वेषां मदगतेनाअन्तरात्मना।
श्रद्धावान भजते यो मां स में युक्तमो मतः।।

गीता में योगेश्वर श्री कृष्ण कहते हैं सब योगियों में भी अच्छा योगी उसे माना जाता है जो अपनी अंतरात्मा मुझमें लगाता है उसके मन में श्रद्धा होती है। वह मुझे भजता है, उसे मैं योगी मानता हूं।

योग शब्द युज धातु के बाद करण और भाववाच्य में धज प्रत्यय लगाने से बनता है। युज धातु का अर्थ है समाधि। समाधि शब्द का अर्थ है सम्यक प्रकार से परम शक्ति के साथ युक्त हो जाना मिल जाना। जीव की कामना, वासना, आसक्ति, संस्कार आदि सब प्रकार की दुर्भावनाओं को दूर कर-के अपने स्वरूप में स्थित होकर ब्रहमाण्ड में उच्चस्तरीय ऊर्जा से मिल जाना है। योग शब्द का अर्थ है जीव और ब्रहम का पूर्ण रूप से मिलन। जीव जन्म लेते ही सांसारिक भव सागर में फंसकर परमपिता द्वारा बनाई गई इस शरीर रूपी परम कृति को अपने अनुचित आहार विहार एवं अकर्मण्यता को अपनाकर व्याधियों का घर बना लेता है। लेकिन जैसे ही योग को जीवन में अपना लिया जाता है सभी व्याधियों एवं दुखों का नाश हो जाता है। योग वास्तव में स्वः से जुड़ना है। अपने आप से जुड़ जाना ही सर्वोत्तम योग है। अर्थात यहाँ भटकाव नहीं है और जहाँ भटकाव नहीं है वहीं एकाग्रता है एवं वही योग है जो लोग आपे में नहीं होते वो स्यापे में होते हैं। महर्षि पतंजलि के अनुसार चित्त की वृत्तियों का निरोध करके स्वरूप प्रतिष्ठित होना योग है।

योगष्चित्तवृत्ति निरोधः
तदा द्रष्टु : स्वरूपेअवस्थानम

यहाँ पर यह भी उल्लेखनीय है कि सुख : दुख पाप-पुण्य, शत्रु मित्र, शीतोष्ण आदि द्वंद्वों से अतीत होकर समत्व प्राप्त करना भी योग है।

गीता में भी कहा है समत्वं योग उच्चयते।

'युज्यते अनेन इति' योग शब्द के द्वारा आसन प्राणायाम आदि अष्टांग योग प्रणाली को भी योग के सहायक रूप में रखा गया है। वास्तव में किसी भी कार्य साधना की सहज सुन्दर और स्वाभाविक प्रणाली योग के अन्तर्गत मानी जाती है। सभी श्रेष्ठ कार्य योग के द्वारा ही सम्पन्न किये जा सकते है। सभी कार्य मनोवृत्ति पर निर्भर करते हैं। चित्त की एकाग्रता के बिना कोई भी कार्य कुशलता के साथ सम्पन्न नहीं हो सकता है। चित्त की एकाग्रता के लिए आवश्यक है धारणा व ध्यान का अभ्यास। ध्यान व समाधि की इच्छा रखने वालो को अष्टांग योग के विषय में अवश्य जान लेना चाहिये। जैसे सुदृढ़ नींव के बिना एक मजबूत भवन की कल्पना नहीं की जा सकती है ऐसे ही यम, नियम के पालन किये बिना ध्यान एवं समाधि तक पहुँचना असम्भव है। वास्तव में अगर देखा जाये तो दुर्गुण व दुराचार हमारी साधना में बाधक है। अतः ध्यान और समाधि तक पहुँचने के लिये प्रथम यम एवं नियम का पालन करके ही योग के अन्य अंगों का अनुपालन करना चाहिये। जो प्राणी योग के आठों अंगों को सजगता से साध लेता है उसका अन्तः करण पवित्र हो जाता है। जिससे उसे अलौकिक ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। कहा भी गया है कि ज्ञायते अनेन इति ज्ञानम।

अष्टांग योग : योग के आठ अंग हैं।

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि

इनमें पहले पांच अंग योग के बाह्य अंग हैं। बाकी तीन अंतरंग हैं। ये ही तीन प्रधान है। कारण यह है कि ये ही तीन साधनायें सभी कार्यों में उपयोगी है। जो मानन उच्च ज्ञान की प्राप्ति की इच्छा रखता है। वह इन तीनों के माध्यम से ही उच्च ज्ञान प्राप्त कर सकता है। क्योंकि जब तक इच्छित पदार्थ पर मन एकाग्रतापूर्वक नहीं लगाया जाता तब तक उसका ज्ञान असम्भव है। एकाग्रता को प्राप्त कर लेता है वही ध्यान है और जब मन इस अवस्था में मग्न हो गया है वही समाधि हैं किसी भी कार्य को कुशलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिये इन तीनों का सामन्जस्य आवश्यक हैं।

यमः

1. अहिंसा-किसी भी प्राणी को मन से वाणी से एवं शरीर से कष्ट न पहुँचाना अहिंसा है।
2. सत्य-अन्तःकरण व इन्द्रियों द्वारा जैसा समझा गया वैसा ही प्रिय शब्दों के द्वारा प्रकट करना ही सत्य है।
3. अस्तेय-मन वाणी व शरीर द्वारा किसी के हक को न चुराना, न लेना व न छीनना अस्तेय है।
4. ब्रहमचर्य-मन, इन्द्रिय और शरीर द्वारा होने वाले काम विचार के अभाव का नाम ब्रह्मचर्य है।
5. अपरिग्रह-किसी भी प्रकार की भोग सामग्री का आवश्यकता से अधिक संग्रह न करना अपरिग्रह है।

नियमः

1. शौच (पवित्रता)-शरीर की शुद्धता जल आदि से। स्वार्थ त्याग से व्यवहार व आचरण की शुद्धता एवं सात्विक आहार का सेवन, बाहरी पवित्रता है। अहंता ममता राग द्वेष ईर्ष्या भय व काम क्रोध आदि भीतरी दुर्गुणों के त्याग से भीतरी पवित्रता होती है।
2. सन्तोष-सुखः दुख, लाभ हानि, यश अपयश, सिद्धि असिद्धि, अनुकूलता प्रतिकूलता आदि सभी परिस्थितियों में सम एवं प्रसन्नचित्त रहना ही सन्तोष है। संतोष में सर्वोत्तम सुख की प्राप्ति होती है।
3. तप-मन एवं इन्द्रियों को संयमित करते हुये लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सतत् प्रयास करना ही तप है।
4. स्वाध्याय-अध्ययन एवं मनन के द्वारा ज्ञान अर्जन करना ही स्वाध्याय है।
5. ईश्वर प्राविधान-दिव्य शक्ति के समक्ष पूर्ण समर्पण करना ही ईश्वर प्राणिधान है। ईश्वर प्राणिधान से ही समाधि की सिद्धि होती है।

आसनः

''स्थिर सुखम आसनम'' शरीर की ऐसी स्थिति में रखना जिसमें स्थिरतापूर्वक व सुखपूर्वक रह सके। आसन करने के दो मूल सिद्धान्त हैं, सुखानुभूति एवं स्थिरता।

प्राणायामः

आसन सिद्ध हो जाने पर श्वास व प्रश्वास की गति पर नियंत्रण करना ही प्राणायाम है। बाहरी वायु का भीतर प्रवेश करना श्वास है, एवं भीतर की वायु का बाहर निकालना ही प्रश्वास है। प्राणायाम के अभ्यास से इडा पिंगला एवं सुषम्ना नाड़ी प्रभावित होती है जिससे अनेक प्रकार की शक्तियाँ विकसित होती हैं।

प्रत्याहारः

इन्द्रियों का अपने अपने विषयों के संग से रहित होने पर इन्द्रियों का चित्त के साथ अवस्थित होना प्रत्याहार है। प्रत्याहार से इन्द्रियाँ वश में हो जाती हैं।

धारणाः

ध्येय वस्तु का एकाग्रचिम होकर मनन करना धारणा है भाव यह है कि चित्त को स्थिर करना ही धारणा है।

ध्यानः

ध्येय वस्तु मे ही अनवरत लगा रहना ध्यान है मन का किसी एक विषय पर टिकना ही ध्यान है। ध्यान जितना परिपक्व होता है उतनी ही मन की सफाई होती है। ध्यान हमारी ऊर्जा शक्ति का संचय करता है।

समाधिः

समाधि ध्यान की चरम सीमा है। मन की चंचलता समाप्त होकर चित्त की एकाग्रता एवं चेतना की जागृति ही समाधि है।

अन्त में हम यह कह सकते हैं कि यदि हम व्यवहारिक जीवन में योग को अपनायें तो हम स्वतः ही सजग एवं जाग्रत होकर प्रसन्नचित्त एवं कर्तव्यनिष्ठ हो जावेंगे। ज्योतिष शास्त्र की भी यह मान्यता है कि भाग्य कर्म से ही बनता बिगड़ता है। अतः हम श्रेष्ठ कर्मों को धारणा में लाकर सजगतापूर्वक ध्यान करते हुये श्रेष्ठ कर्मों में भागीदार बनेंगे। शरीर की जाग्रत अवस्था ही सर्वोत्तम अवस्था है। श्री मदभगवतगीता में योगेश्वर श्री कृष्ण ने भी योग के विषय में कहा है-

बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृत-दुष्कृते।
तस्माद योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम॥

बुद्धि को योग में लगाकर पुरुष पुण्य और पाप को अच्छे और बुरे कर्म को फेंक देता है। इसलिये तू योग की साधना कर। कार्य को अच्छी तरह करने का, कर्म में कुशलता का, दक्षता का नाम योग है।

जंगवीर सिंह

पवन हंस गीत

पंखों को पसार कर
ऊंची डगों में भरकर
तू उड़ चल मीलों दूर,
तू उड़ चल ऐसी राहों पर
जहां से जाना न हो आसान
दुर्गम पहाड़ियां, उबड़ खाबड़ जमीन
तू छोड़ दे अपने निशा वहां
तू उड़ चल ऐसी राहों पर
जहां हो जल का विस्तार
असीम सीमाओं को तू पार कर
और छोड़ चल अपने निशां
तू उड़ चल ऐसी राहों पर
जहां लोगों को हो तेरी जरूरत
हो अमरनाथ या केदारनाथ
या हो चारो धाम की यात्रा
कर मदद तू आपातकाल में
और छोड़ चल अपने निशां
लोगों के दिलो दिमाग पर
हस सी तो भर उड़ारी
पवन को फिर चीर कर
तू उड़ मीलों दूर.....

प्रेषक : मनीषा तिवारी
कनिष्ठ तकनीशियन
(उ0 क्षे0)

मन तू उदास क्यों है?

मन तू इतना उदास क्यों हैं?
क्या तू कुछ भूल गया है,
या कुछ पीछे छूट गया है,
हो गई क्या गलती तुझसे
या तेरा अहं ही टूट गया है,
जो हो गया उसे भूल जा
अब पछताय होत क्या,
क्या छुपा है भविष्य के गर्त में
कोई नहीं है जानता
क्या है मुस्तकबिल तेरा
तू खुद नही पहचानता॥
इसलिये तू कर्म कर
फल की इच्छा मत कर।
स्वर्णिम भविष्य होगा तेरा
इस शर्त पर कि तू
गल्तियों से सीखेगा,
उन्हें कभी नहीं दोहराएगा,
ऐ मन , उदास मत हो।
नर हो निराश मत हो।
प्रफुल्लित हो जाओ,
उत्सव मनाओ।
क्योंकि खुशियों से भरा है भविष्य तेरा
कल होगा ही होगा जीवन मे सवेरा॥

अद्भुत हिंदी

क्या आप जानते हैं?

पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग शब्दों की पहचान

- प्राय: जिन शब्दों के अंत में आ, आव, पा, पन, न लगा होता है वह पुल्लिंग होते हैं। तथा जिन शब्दों के अंत में ख तथा भाववाचक संज्ञा के अंत में ट, वट, या हट होता है वह स्त्रीलिंग शब्द होते हैं।
- हिंदी शब्द मूलत: फारसी का है न कि 'हिंदी' भाषा का। उत्तर पश्चिम से आने वाले विदेशियों के दर्शन सिंध प्रदेश से हुये। ईरान में अवेस्ता भाषा बोली जाती थी, जिसमें 'स' ध्वनि के स्थान पर 'ह' ध्वनि का प्रयोग होता था, इसीलिए सिंध प्रदेश में बोली जाने वाली बोली हिंदी कहलाई।
- खड़ी बोली हिंदी में रचना करने वाले सबसे पहले रचनाकार अमीर खुसरो थे। भारतीय गायन में कव्वाली और सितार इन्हीं की देन माना जाता है।
- हिन्दी में ये शब्द विदेशी भाषा से लिये गये हैं।

- **फारसी:** अनार, चश्मा, जमींदार, दुकान, दरबार, नमक, नमूना, बीमार, बर्फ, रुमाल, आदमी, चुगलखोर, गंदगी, चापलूसी आदि।
- **अरबी:** औलाद, अमीर, कत्ल, कलम, कानून, खत, फकीर, रिश्वत, औरत, कैदी, मालिक, गरीब आदि।
- **तुर्की:** कैंची, चाकू, तोप, बारूद, लाश, दारोगा, बहादुर आदि।
- **पुर्तगाली:** अचार, आलपीन, कारतूस, गमला, चाबी, तिजोरी, तौलिया, फीता, साबुन, तंबाकू, कॉफी, कमीज आदि।
- **फ्रांसीसी:** पुलिस, कार्टून, इंजीनियर, कर्फ्यू, बिगुल आदि।
- **चीनी:** तूफान, लीची, चाय, पटाखा आदि।
- **यूनानी:** टेलीफोन, टेलीग्राफ, ऐटम, डेल्टा आदि।
- **जापानी:** सिक्शा आदि।

बाएं से दाएं

3 एक अन्न (3)
6 सिर झुकाए हुए, विनीत (5)
7 अत्यंत, प्रधान, उत्कृष्ट (3)
9 आभिजात्य, उच्च कुल का (3)
11 लता (3)
12 उत्तरदायित्व से मुकरना (मुहावरा) (2,2,1,2,2)
13 सिंह की माँद (2)
14 कूड़ा-कर्कट (3)
18 लघुता, कमी (3)
19 बौखलाया हुआ (2,3)
20 निकम्मे (3)

ऊपर से नीचे

1 चमक-दमक (3)
2 गुलदान (3)
3 दोनों का एक-सा बुरा होना (मुहावरा) (2,2,1,2,2)
4 वसन, वस्त्र (3)
5 घबराहट होना, उल्टी करने का मन होना (5)
8 शरीर में पत्थर जैसे कण जमने का रोग (3)
9 खाली (2)
10 नाज, अदा (3)
11 मूर्छित (3)
12 मदद या भीख माँगना (मुहावरा) (5)
15 पृथ्वी (3)
16 धुंध, ओस (3)
17 शराब, अर्क (3)

बेटी क्यों नहीं

अगर बेटा वारिस है, तो बेटी पारस है। अगर बेटा वंश है, तो बेटी अंश है।
अगर बेटा आन है, तो बेटी गुमान है। अगर बेटा संस्कार है, तो बेटी संस्कृति है।
अगर बेटा आग है, तो बेटी बाग है। अगर बेटा दवा है, तो बेटी दुआ है।
अगर बेटा भाग्य, तो बेटी सौभाग्य है। अगर बेटा शब्द है, तो बेटी अर्थ है।
अगर बेटा गीत है, तो बेटी संगीत है। जब इतनी कीमती हैं बेटियां।
तो फिर क्यों खटकती है मन को बेटियां। जबकि सबको पता है,
बेटों को भी जन्म देती हैं बेटियां

हिन्दी अनुभाग
मुम्बई (पश्चिम क्षेत्र)

ये बेटियां

बेटियां चिड़ियों की तरह होती है, पर पंख नहीं होते इनके
मायके होते हैं, ससुराल होते हैं पर घरौंदे नहीं होते इन बेटियों के,
मां बाप कहते हैं, परायी है ये और ससुराल में सुनती पराये घर से आई है ये,
ईश्वर!
अब तू ही बता
किस घर के लिए बनाई है ये?????

ऊषा मरवाह
(वरि.अफिस सहायक)

बस यही दो मसले

बस यही दो मसले
जिन्दगी भर ना हल हुये
न नींद पूरी हुई
न ख्वाब पूरे हुये
आज जिस्म में जान है तो
देखते नहीं है लोग
जब जान निकल जायेगी
तब कफन हटा हटा के देखेंगे लोग।
मरने वाले को रोने वाले हजार मिल जायेंगे
मगर जो जिन्दा है उसे समझने वाला कोई नहीं मिलता।
परिवर्तन से डरना और संघर्ष से कतराना
मनुष्य की सबसे बड़ी कायरता है
जीवन का सबसे बड़ा गुरू वक्त होता है
क्योंकि जो वक्त सिखाता है वो कोई नहीं सिखा सकता।
गंगा में डुबकी लगाकर तीर्थ हजारों बार किये
तीर्थों से क्या होगा अगर अपने विचारों को न बदला।
गलतियाँ जीवन का हिस्सा है
पर इन्हें स्वीकार करने का
साहस बहुत कम लोगो को होता है।

ऊषा मरवाह
वरि० आफिस सहायक
अमि० विभाग, उ० क्षेत्र

शुभारंभ तो करो

शुभारंभ तो करो
अंजाम सुखद होगा
वक्त तो विश्वासघाती है
शुभारंभ तो करो
अंजाम सुखद ही होगा
शुरूआत में हिचकिचाहट!
शुरुआत में ही डर!
संघर्ष क्यूंकरा करोगे तुम
शुभारंभ तो करो
अंजाम सुखद ही होगा
'फिर कभी' बड़ा बेवफा है ।
कहीं फिर कभी में
फिर कभी न आए तो ?
शुभारंभ तो करो
अंजाम सुखद ही होगा
आज ही अब ही
कुछ नहीं होगा
फिर भी
शुभारंभ तो करो
अंजाम सुखद ही होगा

(भूपेंद्र कौर)
अनुभाग अधिकारी(प्रका)

दो पहलू

पानी आसमान की तरफ उठे तो भाप

आसमान से नीचे गिरे तो बारिश॥

जमके गिरे तो ओले।

और गिरकर जमे तो बर्फ॥

फुल की पत्ती पर गिरे तो शबनम।

पत्ती से निकले तो अरक॥

जमा हो जाये पानी तो झील।

बहने लगे तो नदी॥

आँखों से निकले तो आँसू।

जिस्म से निकले तो पसीना॥

दूसरे में जल्दी मिल जाती है बुराई।

और अपनी हमेशा दिखती है

अच्छाई॥

रीना कसाना

आशुलिपिक/टंकण

(अभियांत्रिक विभाग)

कर लो अपने वतन से प्यार

जीवन है ये दिन दो चार॥ कर लो अपने वतन से प्यार॥

छोड़ो आपस की तकरार॥ कर लो अपने वतन से प्यार।

मेरी बात सुनो सरकार॥ कर लो अपने वतन से प्यार।

मेरा क्या है, मैं तो भैया दो दिन का बंजारा॥ लेकर दिल का इकतारा।

फिरता हूँ मारा मारा। लेकिन बात कहूँगा सच्ची॥

गाँठ बाँध लो भैया। एक दिवस निश्चित डूबेगी॥

खुदगर्जी की नैया। दिल वालों को आखिर होगी॥।

जग में जय जयकार। कर लो अपने वतन से प्यार॥

ये बंगाली, वो मदरासी, वो है राजस्थानी!! एक मगर मैं खोज रहा हूँ सच्चा हिन्दुस्तानी।

मतभेदों को छोड़ छाड़कर दिल का रिश्ता जोड़ो।

खुशहाली की ओर मुसाफिर जीवन का रथ मोड़ो।

जो भारत से आँख चुराये उसको है धिक्कार।

कर लो अपने वतन से प्यार

दिलबाग सिंह तंवर

प्रधान परिचर ३ क्षे

मा0 स0 वि0

कर्मचारी सं0 1236

संस्कार

नाम : निधि धायमा
पदनाम : हिन्दी अनुवादक

कहाँ गए भारत के वो पहले वाले संस्कार
जब छूते थे पाँव और कहते थे नमस्कार,
अब तो आदत सी पड़ गई है हमें गुलामी कि सुबह शाम,
सुबह उठकर कहते गुड मॉर्निंग
भूल गये प्रणाम
अंग्रेज तो गये पर छोड़ गये अपनी
संस्कृति और भाषा,
सबके मन में है अब अंग्रेज बनने की अभिलाषा,
आप ही कहो, कैसे हो पूरी बापू की मन की आशा,
जब चारो तरफ दिखाई देती हिन्दी के प्रति निराशा,
किस आधार पर हम करे ऐसा दावा,
हिन्दी हमारी राजभाषा, इसमें नहीं छलावा
जब तक हम हिन्दी में नहीं कार्य सभी अपनायेंगे
स्वतंत्र होकर भी गुलाम कहलायेंगे,
जब हम अपने तन मन से हिन्दी को अपनायेंगे,
तभी वास्तव में स्वतंत्र और शुद्ध भारतीय कहलायेंगे।

दहेज की आग क्यूँ?

भगवान का अनमोल तोहफा समझ माँ ने कोख में पाला मुझे।
संसार में खोली जो आखें पिता ने गोद में लेना चाहा मुझे।
चोट न लग जाये मेरी नन्ही परी को, प्यार से गले लगाया मुझे॥
माँ के आँचल में बाबुल के आँगन में।
बड़े नाजों से पलको पे संजोकर पाला मुझे।
भगवान का अनमोल तोहफा समझ माँ ने कोख में पाला मुझे॥
आज उनकी बिटिया जब बड़ी हो गई।
नन्हें पावों की वो पाजेब, जब पायल हो गई।
बेटी के पराये घर जाने की लाख मुश्किलें खड़ी हो गई॥
कोई माँगे सोना चाँदी कोई माँगे लाखों की कार।
कैसे कह दे देने को है, बस ये रब का उपहार॥
बिटिया मेरी ये तो वो अनमोल गहना है।
जिसके आगे फीका पड़ा हर चाँदी हर सोना है॥
इसका न कोई मोल है, ये तो अनमोल है।
सोने, चाँदी, हीरे, मोती इसके आगे बेमोल हैं॥
मुझे हर खुशी देने को, वर्षों की चीज दाँव पर लगा दी।
जीवन भर की पूंजी आज एक झटके में गवाँ दी॥
मेरी बिटियाँ होने की सजा क्यूँ मिली उसे
भगवान का अनमोल तोहफा समझ...
जिस माँ ने कोख में पाला मुझे

रीना कसाना
आषुलिपिक / टंकण
(अभियान्त्रिक विभाग)

8th International Conference cum Awards
INDIAN CIVIL AVIATION & TOURISM

TRAVELLER

8th International Conference cum Awards
INDIAN CIVIL AVIATION & TOUR

छाया संसार

पवन हंस लिमिटेड

Pawan Hans Limited

(A Government of India Enterprise)

WE fly FOR YOU

Corporate office:-
Pawan Hans Ltd.
C-14, Sector-1,
Gautam Budh Nagar,
Noida (U.P.) – 201 301
E-mail:- contact@pawanhans.co.in
Phone: - 0120-2476700
Fax: - 0120-2476983

Northern Region:-
General Manager,
Pawan Hans Ltd.
Safdarjung Airport,
New Delhi, 110 003
E-mail:- gm_nr@pawanhans.co.in
Phone: - 011-24615711
Fax: - 011-24611801

Western Region:-
General Manager,
Pawan Hans Ltd.
Juhu Aerodrome,S. V. Road,
Vile Parle (West),
Mumbai, 400 056
E-mail:- gm_wr@pawanhans.co.in
Phone: - 022-26142614, 26146211,
Fax: - 022-26146926,26261704

Eastern Region:-
General Manager,
Pawan Hans Ltd.
3rd Floor, Hotel Rajashri Inn,
VIP Airport Road, near LGBI Airport,
Kamrup(Metro), Guwahati 781015, Assam
E-mail:- gm_er@pawanhans.co.in
Phone: - 0361- 2842175
Fax: - 0361- 2842177